चाँद मुंगेरी

चिड़िया

शाम - सबेरे गाती चिड़िया ,
सबके मन को भाती चिड़िया।

सूरज का रथ जैसे आता,
नीड़ छोड़ उड़ जाती चिड़िया।

घूम- घूम कर मेढ़ खेत में ,
चून-बीछ कर खाती चिड़िया ।

जग चाहे जिस स्वर में बोले,
मीठे बोल सुनाती चिड़िया ।

कठिन परिश्रम सुख की खातिर ,
यह,, "संदेशा" लाती चिड़िया ।

प्यार की शिक्षा सब को देती,
बदले में क्या पाती चिड़िया ।

हो गया अम्बर, नीला- नीला

नीला -पीला, लाल गुलाबी,
फूल बजाते झूम के ताली।

ताली सुनकर कोयल आती,
झूम - झूम कर गाना गाती,

गाती कोयल डोल-डोल कर,
स्वर में मिसरी घोल घोल कर।

घोल के मिसरी जग को देती,
राम, रहीम क्या मुण्डा सेठी।

सेठी ने कुछ बात निकाली,
सब ने सुन कर मारी ताली।

ताली ,, पाकर रंग' रंगीला,
हो गया अम्बर नीला- नीला।।

 ISSN:2583-8849